12 जुलाई, 2016 को अमरकंटक, मध्य प्रदेश में ''नई शिक्षा नीति और **Nano Architecture & Mobile Oriented Digital Institutes Framework (NAMODI)**'' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान माननीय अध्यक्ष महोदय का भाषण

1. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक द्वारा ''नई शिक्षा नीति और ''**Nano Architecture & Mobile Oriented Digital Institutes Framework (NAMODI)**'' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के इस उद्घाटन सत्र में आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। साथ ही अमरता के प्रतीक और प्राकृतिक विरासत को समेटे इस प्राचीन और पवित्र नगर अमरकंटक में आकर मुझे सुख और शांति का अनुभव हो रहा है।

2. सबसे पहले, मैं यहां इस गरिमामय आयोजन के लिए प्रो. टी.वी. कट्टिमणि और उनकी टीम को बधाई देती हूं। वास्तव में ऐसे सम्मेलन का आयोजन करना सर्वथा सामयिक एवं प्रासंगिक है, विशेष रूप से ऐसे समय में जब हम सूचना क्रांति के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ने और सूचना प्रौद्योगिकी की उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए नई शिक्षा नीति बनाने और इसका पूरी तरह से डिजिटलीकरण करने की ओर अग्रसर हैं। हमें अपनी भावी शिक्षा नीति के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण पत्र की आवश्यकता है। इस बारे में, मैं कहना चाहूंगी कि यह सम्मेलन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस सम्मेलन ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों से विभिन्न हितधारकों को एक साझा मंच प्रदान कर एकजुट किया है। विषय के विशेषज्ञों और विद्वानों द्वारा यहां व्यक्त किए गए और परस्पर साझा किए गए विचार हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति तैयार करने के कार्य को अवश्य प्रभावित करेंगे। मुझे यह जानकर खुशी है

कि इस सम्मेलन में डिजिटल इंडिया पहल के तहत पूरे देश को हाई स्पीड इंटरनेट के माध्यम से जोड़ने संबंधी योजना तैयार करने के साथ–साथ "**Nano Architecture & Mobile Oriented Digital Institutes Framework (NAMODI)**" और डिजिटल शिक्षा के कार्यान्वयन हेतु कार्य नीतियों पर भी चर्चा की जाएगी।

3. किसी भी राष्ट्र के लिए राष्ट्र निर्माण, उन्नति एवं स्वाभिमान अर्जित करने के लिए शिक्षित एवं समर्थ नागरिक बुनियादी आवश्यकता है और शिक्षित एवं समर्थ नागरिक निर्माण में समाज के अतिरिक्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा और शिक्षा नीति की होती है। जब मैं आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा पर चिन्तन करती हूं, तो कई बातें मेरे मन मस्तिष्क में एकाएक आती हैं। **Access and Equity to quality education are the two prime pillars of a good education system**:–

क. पहुंच (**Access**)– अच्छी शिक्षा हर विद्यार्थी और नागरिक की पहुंच के भीतर होना चाहिए। यह इस सिद्धान्त पर आधारित है कि हर व्यक्ति के लिए शिक्षा **affordable** हो।

ख. समता (**Equity**) – अच्छी शिक्षा न केवल सबकी पहुंच में हो बल्कि सभी को समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले। अच्छी शिक्षा पर किसी वर्ग विशेष या शक्तिशाली समूह का वर्चस्व न हो।

ग. गुणवत्ता (**Quality**)– शिक्षा की गुणवत्ता ऐसी होनी चाहिए जो न केवल उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाए। साथ ही एक आदर्श विश्व नागरिक भी बनाए।

घ. प्रासंगिकता (**Relevance**) – शिक्षा ऐसी हो जो पूरे विश्व में उपयोग में लाई जा सके। शिक्षा के पाठ्यक्रम को समय, स्थानीय परिस्थितियों, संस्कृति एवं सामयिक जीवन शैली

के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। अध्ययन हेतु विषयों का चयन ऐसा हो, जो विद्यार्थियों के करियर को संपुष्ट **(nourish)** करने के साथ–साथ उनमें समुचित ज्ञान और उसके प्रति अभिरूचि (**Interest**) पैदा कर सके।

वर्तमान में भारत में गुणकारी शिक्षा देने की जरूरत है जिससे छात्र प्रतिभा विकसित हो। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ है विचार (ज्ञान), संस्कार (भावात्मक उत्थान) तथा रोज़गार (श्रम आधारित अर्जन) देने वाली शिक्षा। प्राइमरी स्तर पर वरीयता संस्कार को, सेकेंडरी स्तर पर वरीयता रोज़गार (**skill development**) तथा विश्वविद्यालय स्तर पर विचार या ज्ञान को मिलनी चाहिए। हर स्तर पर तीनों का मेल रहना आवश्यक है। **Head, Heart and Hand** की शिक्षा पर बल दिया जाए और इसका वरीयता क्रम होना आवश्यक है।

4. शिक्षा ऐसी हो जो नागरिकों को स्वावलम्बी एवं सामर्थ्यवान बनाये और विशेष दक्षता (**skill development**) एवं उद्यमिता के गुणों से सम्पन्न बनाएं ताकि वह सम्मान के साथ अपने लिए अर्थोपार्जन कर सके। अभी हाल ही में मैंने अखबार में पढ़ा कि कहीं कुली की भर्ती के लिए ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट तथा उससे भी ऊपर की डिग्री हासिल किए हुए अभ्यर्थी ने आवेदन किया। इससे यह प्रतीत होता है कि उच्च शिक्षा वाले छात्र उचित रोजगार के अभाव में अपनी शिक्षा से परे कार्य करने के लिए विवश हैं।

5. एक ख्याल और मेरे मन में आता है जो मैं आपसे साझा करना चाहूंगी कि बेशक ग्लोबलाइजेशन का युग हो और संसार सिमट कर छोटा हो गया हो पर फिर भी हमारी शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिए जो हमारी आने वाली पीढ़ी को टेक्नॉलॉजी के लाभ देने के साथ–साथ उन्हें अपनी संस्कृति और संस्कार से जोड़े रखे। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में **Education is a process by which character is formed,**

strength of mind is increased, and intellect is sharpened, as a result of which one can stand on one's own feet.

6. हमारे यहां शिक्षा अर्थोपार्जन के साथ–साथ उच्च चरित्र, समाज और राष्ट्र के लिए संवेदना और समर्पण और सही कर्तव्य पथ पर गमन शिक्षा के माध्यम से आता था। कई बार ऐसा महसूस होता है कि शिक्षा में उन शाश्वत मूल्यों के प्रति आग्रह कम हो रहा है जो संस्कृत वांड़मय में यत्र–तत्र विखरे पड़े हैं और जिनके कारण भारतीय संस्कृति सदैव महिमामंडित होती रही है। इस पर चिंतन करना होगा और अपनी शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा पर अधिक बल देना होगा।

7. देखने में आया है कि विज्ञान के मूलभूत विषयों जैसे भौतिकी, रसायनशास्त्र, गणित इत्यादि के अध्ययन के प्रति भी विद्यार्थियों में रूचि कम हुई है। ज्यादातर विद्यार्थी तकनीकी एवं रोजगारोन्मुखी प्रोफेशनल कोर्स की ओर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं जो कि स्वाभाविक भी है। परंतु सच यह है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए इन विज्ञान विषयों के **Expert** की अत्यंत आवश्यकता है। वास्तव में **applied science** और **technology** का विकास **pure science** के अध्ययन पर ही आधारित है। अतः, हमें इस दिशा में यथोचित बदलाव करने होंगे।

8. शिक्षा के परंपरागत ढांचे के बाहर जाकर कार्य करने की आवश्यकता है। **Innovative ideas** शिक्षा पद्धति की दशा और दिशा बदल सकते हैं। **Innovation is change that unlocks new values. In fact, it distinguishes between a leader and follower.** प्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटीन ने कहा

थाः– **"Imagination is more important than knowledge. Knowledge is limited. Imagination encircles the world."**

9. अपने आस–पास की समस्याओं के निराकरण के लिए अपने परिवेश में **Innovative** सोच, **Imagination** और संवेदनशीलता विकसित करने के लिए शिक्षा प्रणाली सहायक हो, यह आवश्यक है। उदाहरण के लिए हम सब जानते हैं कि कृषि क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिला कामगारों की संख्या ज्यादा है। मुझे नहीं लगता है कि **women friendly tools** विकसित करने के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों एवं शोध संस्थानों की सोच एवं प्रयास हो पाए हैं। हमें यह भी सोचना चाहिए कि क्या कारण हैं कि हमारे उच्च शिक्षा संस्थान नए पेटेंट रजिस्टर कराने में उतने सफल नहीं हो पाते हैं जितने कि उनसे अपेक्षा है और क्यों वे अपने गांव, शहर, प्रदेश एवं देश की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए स्थानीय स्तर पर **Innovative solutions** लेकर नहीं आ पाते हैं। कुछ एक **Innovative products** के उदाहरण के रूप में हमारे सामने आए हैं लेकिन व्यावसायिक रूप से उन्हें हम सफल **product** बनाकर प्रस्तुत नही कर पाएं हैं।

10. नई सोच, नए साधन एवं नए **Innovation** में हमारा देश, हमारे शिक्षा संस्थान कैसे नेतृत्व कर सकते हैं और देश की समस्याओं के समाधान के लिए क्या कर सकते हैं। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने एवं सृजनात्मक वातावरण में अन्वेषण की भावना एवं मौलिक सोच विकसित किया जाना चाहिए। मैं यहां उपस्थित सभी शिक्षाविदों से अनुरोध करूंगी कि इस दिशा में वे अपनी सोच और सुझाव दें।

11. शिक्षकों की बात किए बगैर शिक्षा की बात अधूरी है। बचपन से हम सबने यह अवश्य सुना होगा कि ''गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाएं, बलिहारी गुरू आपने जिन गोविन्द दियो बताए।'' बिना अच्छे शिक्षक के सान्निध्य के कई मायनों में शिक्षा अधूरी है। आधुनिक युग के बदलते परिवेश में शिक्षक और छात्र के संबंध भी बदले हैं। पर मेरा यह मानना है कि इनके बीच एक भावनात्मक संबंध भी छात्र को संबल देकर उसे कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का साहस देता है। आज शिक्षण व्यवसाय में बहुत कम लोग ऐसे हैं जो स्वतः आना चाहते हैं। इसका कारण यह भी है कि हमारी परंपराओं के विपरीत समाज में उनके प्रति आदर और समर्पण के भाव में कमी आ गई है। आधुनिक युग में हो रहे क्रांतिकारी परिर्वतनों को देखते हुए शिक्षकों की भूमिका को बदलते सामाजिक मूल्यों के आधार पर पुनः परिभाषित करना होगा, जिससे आने वाले परिवर्तनों के संबंध में चुनौतियों को स्वीकार किया जा सके। जैसे इन्दौर में 90 के दशक के अन्त में दो शिक्षाविद् डॉ. बी.के. पासी और डॉ. बी. के. सनसनवाल ने बी.एड. के विद्यार्थियों में **Zero Lecture Class** का अनुभव दिया। इसका मतलब विद्यार्थी सुबह से शाम तक किसी भी विषय पर संवाद और परिचर्चा करते व एक दूसरे से सीखते। शिक्षण पद्धति में **Innovation** से **qulitative and quantitative** दोनों लेवल पर सुधार होगा।

12. वर्तमान में हमारे देश में लगभग 36000 कॉलेज हैं। इन विश्वविद्यालयों में लगभग 2 करोड़ दाखिले हर वर्ष होते हैं जिनमें से मात्र एक प्रतिशत ही **research and development** के क्षेत्र में जाते हैं। यह आंकड़ा बहुत ही कम है। 58 प्रतिशत महाविद्यालय प्राइवेट सेक्टर में हैं। एक चौंकाने वाला आंकड़ा यह है कि प्राइमरी से सेकेंडरी स्तर पर स्कूल छोड़ने वाले बच्चों का प्रतिशत 50 है जबकि सेकेंडरी से हायर स्तर पर स्कूल छोड़ने

वालों का प्रतिशत 37 प्रतिशत है। इसी प्रकार, हायर स्तर से कॉलेज जाने वाले छात्रों के स्कूल छोड़ देने का प्रतिशत 20 प्रतिशत है। भारत में 18 से 23 वर्ष के बीच के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में **Gross Enrolment Ratio** 20.4 प्रतिशत है जबकि संपूर्ण विश्व में यही **Gross Enrolment Ratio 30** प्रतिशत है। अर्थात् **GER** को वैश्विक स्तर के अनुरूप लाने के लिए हमें कम से कम 2000 नए विश्वविद्यालयों की स्थापना करनी होगी।

13. इसके लिए बहुत बड़ी संख्या में संसाधन की आवश्यकता होगी और प्राइवेट सेक्टर और सरकारी सेक्टर दोनों को मिलकर काम करना होगा, तभी विश्व के अच्छे विश्वविद्यालयों में भारत के विश्वविद्यालयों का नाम आ सकेगा और पूर्व की भांति विदेशों से विद्यार्थी यहां अध्ययन के लिए आकर्षित होंगे। भारतीय विद्यार्थियों में विदेशी शिक्षा के प्रति आकर्षण है और यह आकर्षण हमारी अर्थव्यवस्था से करीब 80,000 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष निकलकर दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था में जुड़ जाता है।

14. हमें अपने उच्च शिक्षा संस्थानों को विश्व के सर्वोच्च संस्थानों में शामिल करने के लिए शिक्षा की विषय–वस्तु और गुणवत्ता में आमूल–चूल सुधार करने होंगे। शोध, कौशल विकास, उद्यमिता, व्यावसायिक निर्माण एवं उसकी उपयोगिता पर बहुत बल देना होगा। यह एक विरोधाभास है कि हमारे देश में जहां इंजीनियर्स और प्रोफेशनल डिग्री होल्डर को रोजगार नहीं मिलता है, वहीं उद्योग जगत के लोग कहते हैं कि उन्हें अच्छे **skilled employee** आसानी से नहीं मिलते हैं। इसका अर्थ यह है कि हमारी शिक्षा पद्धति में कहीं कोई रिक्तता है जिसके कारण उद्योग जगत और विद्यार्थियों के बीच में फासला है। इस फासले को कम करने के लिए उद्योग जगत एवं शिक्षा जगत में सुदृढ़ अंतरसंवाद एवं सामंजस्य होना चाहिए और एक दूसरे के आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता होनी चाहिए। लेकिन महत्वपूर्ण यह भी

है कि इतनी बड़ी संख्या में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए शिक्षा संस्थानों के पास संसाधन कहां से आएंगे। सरकार एवं निजी क्षेत्र की सीमाएं हैं। हमें इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि हमारे शिक्षा संस्थान कैसे संसाधनों के मामले में स्वावलम्बी एवं स्वनिर्भर हो सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि शिक्षा की पहुंच गरीब एवं मध्यम वर्ग की **affordability** भी हो। जैसे विदेशी विश्वविद्यालयों में **endowment fund, alumni donation**, सफल शोध कार्यों से अर्जित आमदनी एवं यूनिवर्सिटी की परिसंपत्तियों के कुशल व्यावसायिक संचालन से अर्जित धनराशि के माध्यम से वे अपने सारे खर्चों को सफलतापूर्वक वहन करते हैं। उसी तर्ज पर, मैं शिक्षा जगत से आह्वान करूंगी कि वे इस प्रश्न पर गंभीरता से चिंतन करे और कुछ मौलिक सुझावों के साथ आगे आएं।

15. **Todays world is technology driven world and technology is developing and changing very rapidly to make permanent changes in our lives, our social behaviour, closure of several traditional businesses, yet creation of totally new and innovative business opportunities.** हमें इस टेक्नोलॉजी को अपनी शिक्षा के प्रचार–प्रसार और उन्नयन के लिए उपयोग करना चाहिए। **Distance Education, Edusat** ये आधुनिक तकनीक के साधन है जिसके माध्यम से सुदूर गांवों तक न केवल शिक्षा पहुंच सकती है बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता को भी सुधार सकते हैं। ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि अमरकंटक या पेन्ड्रा रोड के कॉलेज को आई.आई.टी. के सर्वोच्च शिक्षकों की क्लासेज या सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों के लेक्चर का लाभ मिल सके और वे

उनसे **Interaction** से लाभान्वित हो सकें। यदि मुम्बई में कोई गणित का अच्छे टीचर है और वे रोचक तरीके से अपने विद्यार्थियों को पढ़ा सकते हैं तो उसका लाभ **technology** के माध्यम से असम के या नॉर्थ ईस्ट के विद्यार्थियों को क्यों नहीं पहुंच सकता।

16. इसी दिशा में आगामी 15 अगस्त 2016 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय एक नई योजना की घोषणा करने जा रहा है जिसका नाम "**SWAYAM (Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds)**" होगा। यह एक ऐसा वेब पोर्टल होगा जिसके माध्यम से सभी विषयों के लिए **Massive Open Online Courses (MOOCS)** के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था होगी। इन कोर्सों की पहुंच भारत के कोने–कोने तक होगी एवं विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए शिक्षकों के व्याख्यान भी इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में उपलब्ध रहेंगे। इसमें ऐसे विद्यार्थी, जो दूरदराज के क्षेत्र के विद्यार्थी हैं, कामकाजी प्रोफेशनल्स एवं जिन्होंने कॉलेज छोड़ दिया है, ऐसे विद्यार्थी इन कोर्सेज में दाखिला ले सकेंगे। इस योजना के तहत शिक्षण कार्य ऑनलाईन होगा तथा परीक्षाएं भी ऑनलाइन ली जाएंगी एवं उनकी योग्यता के मुताबिक उन्हें डिग्रियां दी जाएंगी। वास्तव में **SWAYAM** एक ऐसा मंच बनकर उभरेगा जिसमें सभी को गुणवत्तापूर्ण एवं सस्ती शिक्षा मिलना संभव हो सकेगा। साथ ही, बिना फेल होने के भय के शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम स्वयं बनकर उभरेगा।

17. शिक्षा के सशक्तिकरण के लिए मानव संसाधन मंत्रालय ने विद्यांजलि स्कीम लांच की है जो कि एक स्कूल वोलंटियर प्रोग्राम है। जिसके तहत कोई भी व्यक्ति अपने क्षेत्र के स्कूलों में एक शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे सकता है। इसमें कई नामी गिरामी हस्तियों ने अपना **enrolment** कराया है जिनमें प्रख्यात डॉक्टर, इंजीनियर, खिलाड़ी, नेता एवं सेना

के रिटायर्ड अधिकारी शामिल हैं जैसे अनिल कुम्बले, लता मंगेशकर, सचिन तेंदुलकर, वेंकैया नायडू इत्यादि। इससे न केवल विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलती हैं बल्कि वे उनके जीवन के अनुभवों से लाभान्वित होते हैं।

18. आज यहां नई शिक्षा नीति एवं **NAMODI FRAMEWORK** पर विचार–मंथन के लिए विश्व के अनेक शिक्षाविद्, तकनीकीविद् एवं प्रख्यात विशेषज्ञ उपस्थित हैं। **NAMODI FRAMEWORK** भारत में शिक्षा में क्रंतिकारी परिवर्तन लाने के लिए एक महत्वाकांक्षी और अनूठी पहल है। इसमें ''स्टार्ट अप इंडिया'',''मेक इन इंडिया'', ''स्किल इंडिया'' और ''स्वच्छ भारत अभियान'' जैसी अन्य सरकारी पहलों को प्रोत्साहित करने और उन्हें सशक्त करने की क्षमता है। यह कार्यक्रम पूरे भारत के लिए एक सार्वजनिक शिक्षा मंच उपलब्ध करा सकता है और ग्रामीण तथा शहरी भारत के बीच की शैक्षिक असमानता को कम कर सकता है। इससे ग्रामीण छात्रों को भी शहरी छात्रों की तरह सबसे अच्छी शिक्षा और अवसर प्राप्त हो सकेंगे। सभी को हर विषय के शिक्षक के साथ–साथ ई–बुक्स भी उपलब्ध होंगे एवं वे अपने शिक्षक को चुनकर उनके लेक्चर को पढ़ सकेंगे, समझ सकेंगे एवं अपने अंदर ज्ञान को आत्मसात कर सकेंगे।

19. मेरा मानना है कि हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हममें अनुशासन, प्रतिबद्धता, सहनशीलता और संवेदनशीलता जैसे गुणों का विकास कर सके जो एक स्वस्थ समाज का आधार है। मैं अपने युवा मित्रों को याद दिलाना चाहती हूं कि किसी राष्ट्र का भविष्य उसके नागरिकों के चरित्र से ही बनता है।

हम सब आधुनिक युग में शिक्षा के महत्त्व से भलीभांति परिचित हैं। शिक्षा निस्संदेह सबसे बड़ी पूँजी है। मैं संस्कृत का एक श्लोक उद्धृत करना चाहूंगी जो इस प्रकार है **:**

''न चोरहार्यम् न च राजहार्यन, भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।

व्यये कृते वर्धते एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम ।।''

इस श्लोक में कहा गया है कि विद्या धन सबसे बड़ा धन है। इसे न तो चोर चुरा सकते हैं और न ही राजा इसका हरण कर सकते हैं। इसे भाइयों में बांटा नहीं जा सकता पर इसे जितना खर्चो, यह उतना ही बढ़ता है। इसलिए हमें हमेशा सीखते रहना चाहिए, अपना ज्ञान सबके साथ बांटना चाहिए और इसका उपयोग समाज के हित के लिए करना चाहिए।''

20. इस दिशा में, नई शिक्षा नीति का निर्माण भारत सरकार का एक प्रशंसनीय कदम है। बहुहितधारक और बहुपक्षीय परामर्श प्रक्रिया, जिसमें राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विषयों से संबंधित ऑनलाइन चर्चाएं भी शामिल हैं, के माध्यम से सभी को इस प्रक्रिया में शामिल होने और अपनी बात कहने का अवसर दिया गया है। शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, सिविल सोसायटी, छात्रों, अध्यापकों और प्रतिनिधि निकायों की भागीदारी से परामर्श की प्रक्रिया और सुदृढ़ हुई है।

21. भारत की जनसंख्या लगभग 125 करोड़ है और हमने स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के विस्तार में उल्लेखनीय प्रगति की है और स्वतंत्रता के समय हमारी साक्षरता दर लगभग 12 प्रतिशत थी और आज 74.04 प्रतिशत है। इन उपलब्धियों के बावजूद अभी भी हमें बहुत कुछ करना बाकी है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि इससे पहले 1968 और 1986 में शिक्षा नीति बनी थी। आज गत 30 वर्षों में पूरे विश्व में अभूतपूर्व संचार एवं सोशल मीडिया क्रांति आई है। ऐसी परिस्थिति में हमारी शिक्षा नीति में भी आमूल–चूल परिवर्तन आवश्यक है।

22. हमें ऐसी शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करना चाहिए जिसमें **E for Education** ही न हो बल्कि **E for Engaging, E for Equitable, E for Economic, E**

for Effective, E for Enterprising, E for Erudite, E for Efficiency, E for Excellence, आदि बिन्दु समाहित होने चाहिएं।

23. मैं इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगी कि कड़ी मेहनत, ईमानदारी और लगन बहुत जरूरी है। हमारे समाज में गुरु को भगवान के समान माना जाता है। छात्रों को अपने अध्यापकों का आदर-सम्मान करना चाहिए। दूसरी ओर अध्यापको को भी यह बात समझनी चाहिए कि देश का भविष्य छात्रों को प्रदान की जा रही शिक्षा और मूल्यों पर निर्भर करता है। मैं समझती हूँ कि आधुनिक विज्ञान और नैतिक मूल्यों से सम्पन्न मजबूत शैक्षिक प्रणाली से हमें अपने देश को विश्व समुदाय में उचित स्थान दिलाने में मदद मिलेगी।

धन्यवाद।